ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2020; 6(6): 52-59
www.allresearchjournal.com
Received: 10-03-2020
Accepted: 12-04-2020

Manorama Devi
Post-Doctoral fellowship
PGDAV College, Delhi
University, Delhi, India

Correspondence Author:
Manorama Devi
Post-Doctoral fellowship
PGDAV College, Delhi
University, Delhi, India

ब्रज संस्कृति में लोक–प्रचलित मेले और लोकोत्सव

Manorama Devi

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति विश्व की संस्कृतियों से भिन्न अन्यतम संस्कृति है, और भारतीय संस्कृतियों में ब्रज लोक–संस्कृति की अलग पहचान है इसीलिए ब्रज लोक संस्कृति संसार की श्रेष्ठत्म संस्कृति कहलाती है। वैदिक युग से वर्तमान युग तक ब्रज लोक संस्कृति ने मानव को शाश्वत जीवन मूल्य और अति उत्तम संस्कार दिये हैं। किसी भी देश की लोक संस्कृति को समझना हो तो सर्वप्रथम उस प्रदेश के सांस्कृतिक मूल्यों को समझना और जानना होगा क्योंकि लोक संस्कृति किसी भी देश, समाज और समुदाय की सम्पन्नता की सूचक होती है। ग्रामीण जीवन के रीति–रिवाज, रहन–सहन, आचार–विचार, धार्मिक आस्था, विश्वास, उत्सव, लोक पर्व, मेला, लोक कलाएँ, लोक गीत, लोक नृत्य, लोक नाट्य, लोक गाथाओं और व्यापार सभी कुछ श्री सम्पदा की ओर आकर्षित करते है। लोक जीवन का पहनावा, उड़ावा, शोक–श्रृंगार, आहार–विहार, भजन–कीर्तन सभी लोक संस्कृति के सशक्त आधार है। लोककर्मः– जन्म से लेकर मरण तक के लोक संस्कार लोक जीवन के प्रत्येक क्षण में उपस्थित रहते है। यही लोक जीवन के विभिन्न तत्व हमारे ब्रज प्रदेश के सांस्कृतिक मूल्य बन जाते हैं। विश्व में उत्तम संस्कृतियों में ब्रज प्रदेश की संस्कृति का नाम आता है। ब्रज संस्कृति से अभिप्रेत भारत वर्ष का हृदय है। भारत में ब्रज जनपद की संस्कृति महत्वपूर्ण तथा महिमामयी है। इसी कारण ब्रज का स्थान सर्वश्रेष्ठ माना गया है।

किसी भी प्रदेश या समाज के सांस्कृतिक वैभव को देखना हो, तो उस प्रदेश या उस समाज के लोकोत्सवों, त्यौहारों और मेलों को देखना चाहिए। मेले, लोकोत्सव और त्यौहार एक–दूसरे से मिलने का, प्रसन्नता प्रकट करने का सबसे बड़ा साधन हैं। ब्रज लोक जीवन मेले–त्यौहारों और उत्सवों से भरा हुआ है। ब्रज के मेलों–त्यौहारों और लोकोत्सवों में ब्रज लोक जीवन की युगों–युगों से चली आ रही, लोक परम्परा के दर्शन होते हैं। इन लोकोत्सवों में सभी ब्रजवासी एक साथ इकठ्ठे होते है और सम्मलित होकर आपसी प्रेम भाव प्रदर्शित करते हैं।

ब्रज का हृदय मथुरा है, ''मथुरा के लिए कहा गया है कि– 'सात बार नौ त्यौहार' ब्रज लोक जीवन जीवान्त जीवन है और यहाँ पूरे वर्ष तीज–त्यौहार, मेले और उत्सवों की खूब धूम रहती है। कभी यह पर्व या त्यौहार, कभी कंस का मेला, तो कभी रामजी द्वारे और दुर्वासा का मेला। इन मेलों का क्रम वर्ष भर लगा ही रहता है, फिर सम्पूर्ण वर्ष मंदिरों में उत्सव होते हैं। मंदिरों में वसंत और होली पर विशेष चहल–पहल रहती है। रंग–गुलाल की होली फिर टेसू के रंग भरी होली और लोक–संगीत तथा शास्त्रीय संगीत में निबद्ध गायन, ब्रज लोक जीवन का प्रमुख आकर्षण बन जाता है। सावन में मंदिरों की रंग–बिरंगी घटाये सभी का मन मोह लेती हैं। कभी सांझी के दर्शन तो कभी छप्पन भोग की झांकी। कहने का तात्पर्य यह है कि ब्रज संस्कृति क्रियाशील और उत्सवमय है।'' [1]

ब्रज में नववर्ष के शुरू होते ही लोकोत्सव की धूम शुरू हो जाती है और पूरे वर्ष चलती रहती है। यहाँ तक की वर्ष के अन्त में भी होलिका दहन के पश्चात भी बड़ी धूम–धाम से उत्सव मनाया जाता है। हम इन लोकोत्सवों मेलों का वर्णन अति संक्षेप में नाम मात्र के लिए दे रहें है। विस्तृत विवरण नहीं दे रहे हैं।

नववर्ष के शुरू होते ही चैत्रमास के शुक्ल पक्ष के प्रथम दिवस से ही नवरात्रि की शुरू रात हो जाती है। ब्रज लोक जीवन में देवी–पूजा का अत्यधिक महत्व है। ब्रजवासी चैत्र शुक्ल की प्रतिपदा से लेकर अष्टमी तक कहीं–कहीं नौंवी तक जगह–जगह देवी–पूजा का उत्सव बड़ी घूम–घाम से मनाते है। नौ दिन व्रत रखते है, पूजा अर्चना करते है, रात्रि–जागरण करते हैं।

यमुना छठ

चैत्रमास की शुक्ल छठ को यमुना जी का जन्मदिन मनाया जाता है। इस दिन विश्राम घाट पर यमुना जी का विशेष फूलडोल सजाया जाता है। ब्रज लोक–जीवन में यमुना का अत्यधिक महत्व है। ब्रज संस्कृति में जन्म से लेकर मृत्यु तक अनेक संस्कार यमुना के किनारे होते हैं।

देवी अष्टमी
चैत्रमास की शुक्ल अष्टमी को देवीआठे मनाई जाती है। इस दिन देवी पूजा का समापन होता है। कन्या लांगुरा जिमाये जाते है। छुके चना, हलुआ, खीर–पूरी का भोजन कन्या–लांगूरा को कराते हैं और दक्षिणा भी देते हैं।

रामनवमीं
चैत्रमास की शुक्ल पक्ष की नवमीं के दिन भगवान राम का जन्मदिन मनाया जाता है। इस दिन व्रत रखते है। राम की पूजा करते है। भजन–कीर्तन करते हैं। मथुरा में रामजी का मेला लगता है।

महावीर जयन्ती
चैत्रमास की शुक्ल तैरस को जैन धर्म के अन्तिम तीर्थकार महावीर स्वामी का जन्म हुआ था। इस दिन जैन लोग महावीर जयन्ती मनाते है। प्राचीन काल में ब्रज में जैन धर्म फैला हुआ था।

हनुमान जयन्ती
चैत्रमास की पूर्णमासी को हनुमान जयन्ती मनाई जाती है। इस दिन हनुमान जी की पूजा–अर्चना करते है। चूरमा और बाटी का प्रसाद चढ़ाया जाता है। हनुमान चालीसा का पाठ करते हैं, और भजन गाते हैं। भण्डारा भी करते हैं। असकुंडा घाट पर स्थित हनुमान मंदिर पर बहुत भीड़ होती है।

अक्षय तृतीया
वैशाखमास की शुक्ल तृतीया को अक्षय तृतीया मनाते हैं। ब्रज में इन दिनों में गर्मी अधिक बढ़ जाती है। लोकोत्सव इस महीने कम मनाये जाते है। इस दिन व्रत रखते है, दान–पुण्य करते है, प्याऊ लगवाते हैं, घड़ा भरकर पानी भी दान करते हैं, पंखा भी दान करते हैं। शीतल लेप मूर्तियों के भी लगाते हैं। वृन्दावन में इस दिन बिहारी जी के मंदिर में बिहारी जी के चरणों के विशेष दर्शन किये जाते हैं।

जानकी नवमीं
वैशाखमास की शुक्ल चौदस को जानकी का जन्म दिन मनाया जाता है। इस दिन ब्रजवासी राम और जानकी जी के मंदिर जाकर पूजा–अर्चना करते हैं।

नरसिंह चतुर्दशी
वैशाख शुक्ल चौदस को नृसिंह जन्मोत्सव मनाया जाता है। इसे ब्रजवासी धार्मिक उत्सव के साथ–साथ लोकोत्सव के रूप में भी मनाते हैं। द्वारिकाधीश के मंदिर में नृसिंह लीला भी होती है। लोकोत्सव में नृसिंह का मुखौटा पहनकर नृत्य करते हुए नृसिंह लीला निकालते हैं।

वैशाखी पूर्णिमा (बुद्ध–पूर्णिमा)
वैशाखमास की शुक्ल पूरनमासी को मनाई जाती है। इस दिन भगवान बुद्ध का जन्म हुआ था। इसलिए इस पूरनमासी को बुद्ध–पूर्णिमा भी कहते हैं। इस उत्सव को बौद्धों के साथ–साथ हिन्दू भी बड़ी धूमधाम से मनाते हैं। हिन्दू भगवान बुद्ध को विष्णु का नवम् अवतार मानते हैं। पंजाबी और बंगाली इस दिन नववर्ष का प्रारम्भ मानते है। पंजाबी वैशाखी बड़ी घूम–घाम से मनाते हैं। यह उत्सव पूरे भारत में मनाया जाता है।

वन–विहार
वैशाखमास की पूरनमासी को ही चाँदनी रात में वन–विहार का लोकोत्सव मनाया जाता है। इस दिन ठाकुर जी को नाव में बिठाकर यमुना विहार कराया जाता हैं। इस अवसर पर ठाकुर जी जल विहार के दर्शन करते है। खूब गायन–वादन होता है। मंदिरों में फूल–बंगले बनाये जाते है।

गंगा–दशहरा
जेठ मास की शुक्ल दशवीं के दिन गंगा दशहरा मनाया जाता है। वराह पुराण के अनुसार–ज्येष्ठ शुक्ल दसवीं के दिन मंगलवार को हस्त नक्षत्र में गंगाजी स्वर्ग से पृथ्वी पर अवतरित हुई थी। स्कन्द पुराण के अनुसार इस दिन भगवान राम ने समुद्र पर सेतु बाँधा था। इस दिन ब्रजवासी गंगा स्नान को जाते हैं, प्याऊ लगवाते हैं, शरबत बाँटते है। घरों की छतों पर पंतगें उड़ाते हैं। ब्रज लोक–जीवन में यमुना का तो प्रमुख स्थान है साथ–साथ गंगा को भी महत्व देते हैं।

निर्जला एकादशी
जेठमास की शुक्ल एकादशी को निर्जला एकादशी मनाते है। इस दिन निर्जल व्रत रखा जाता है। घड़ा भरकर जल, पंखा और फल (खरबूजा) दान देते है। प्याऊ लगवाते है। मंदिरों में ग्रीष्मकालीन श्रृंगार करते हैं।

वट पूजन
जेठमास की अमावस्या को वट पूजन होता है। इस दिन विवाहित स्त्रियाँ वट वृक्ष की पूजा करती है। कलावे या कच्चा सूत लेकर सभी स्त्रियाँ एक साथ कच्चे सूत के साथ–साथ वट वृक्ष की परिक्रमा देती हैं। वृक्ष पर सात वार सूत (कलावा) लेपटा जाता है। यह व्रत चिर सौभाग्यवती होने के लिए होता है। इस दिन सावित्री–सत्यवान की कथा सुनी जाती है।

रथ–यात्रा
यह लोकोत्सव आषाढ़मास की शुक्ल द्वितीया को मनाया जाता है। विशेष रूप से यह उत्सव जगन्नाथ पुरी में मनाया जाता है। ऐसी मान्यता है कि यह उत्सव ब्रज में सर्वप्रथम गोसाई विट्ठलदास ने मनाना शुरू किया था। अब यह उत्सव ब्रज के मंदिरों में अधिकतर मनाया जाता है। वृन्दावन में गोपालजी को रथ में बैठाकर भगवान की सवारी निकाली जाती है। इस दिन मूँग की भीगी दाल, आम और जामुन का भोग लगाया जाता है।

भड़ड़रिया नौमी
यह आषाढ़मास की शुक्ल नौंमी को होती है। इस दिन बिना मुहूर्त के अनसूझे विवाह हो जाते हैं। इसके बाद चतुर्मास में सभी मांगलिक शुभ कार्य स्थगित हो जाते है।

देवसोनी (देवशयनी) एकादशी
आषाढमास की शुक्ल एकादशी को यह लोकोत्सव मनाया जाता है। चार माह के लिए देवो का शयन काल होता है। इस दिन आंगन को लीपकर चौक पूर एक ढरा के नीचे देवताओं को रखकर सुलाया जाता है। देवशयनी एकादशी के बाद कोई भी शुभ कार्य नहीं होता। चार माह तक व्रत, पूजा, परिक्रमा आदि कर सकते हैं। वराह पुराण में यह कहा गया है कि इन चार मासों में ब्रज में देवता शयन करने आते हैं।

व्यास पूर्णिमा
आषाढ़मास की पूरनमासी को व्यास जी का जन्मदिन मनाया जाता है। इस पूर्णिमा को 'गुरू पूर्णिमा/मुड़िया पूनौ' भी कहते हैं। गोवर्धन में इस दिन 'मुड़िया पूनौ' का मेला लगता है। ब्रजवासी इस दिन गिरिराज जी की परिक्रमा देते हैं। इस दिन से दण्डोती परिक्रमा भी शुरू हो जाती है। ब्रज में इस परिक्रमा का विशेष महत्व है। परिक्रमा देते समय समूह में भजन गाते चलते हैं जैसे–

मैं, तो गोवर्धन कूँ जाऊ मेरे वीरा।
नांय माने मेरौ मनुआ।।

सावन का महीना ब्रज में एक नया उत्साह लेकर आता है। इन दिनों में ग्रीष्म की तपन के बाद आकाश में काले बादल छा जाते है। ब्रज लोक–जीवन की छटा इस समय देखने–योग्य होती है। इन दिनों सम्पूर्ण ब्रज के मंदिरों में झूला उत्सव होता है। सावन के महीने में मथुरा, गोकुल, दाऊजी , वृन्दावन, गोवर्धन, नन्दगाँव एवं बरसाने में बाहर से हजारों तीर्थ–यात्री दर्शन हेतु पधारते हैं। ब्रज में अब झूलों की संख्या भी कम होती जा रही है। ब्रज में सभी के कंठो से मल्हार के स्वर गूँजते हैं। इन मल्हारों में भी हरी–भरी प्रकृति की शोभा गरजते बादल, रिमझिम फुहारों का वर्णन मिलता है।

सामन आयौ सुघड़ सुहावनो जी, ऐजी कोई आई है अजब बहार,
झूला तो झूलै सखियाँ बाग में जी, ऐजी कोई गावै गीत मल्हार।।

हरियाली तीज़
सावनमास की शुक्ल तृतीया को मनाई जाती है। लड़कियाँ और विवाहिता हाथों पर मेंहदी और पैरों पर महावर लगाती हैं। नयी चूड़ियाँ पहनकर श्रृंगार करती हैं। विवाहिता गौर पूजन करती हैं और गौर को गोद में लेकर झूला पर पाँच झोटे लेती हैं।

बलदेव जन्मोत्सव और नागपंचमी
सावनमास की शुक्ल पंचमी को बलदेव का जन्मदिवस मनाया जाता है। मंदिरों में बधाई गीत गाये जाते हैं। नाग पंचमी भी इसी दिन मनायी जाती है। इसका विस्तृत विवेचन हम लोक देवता शीर्षक में पहले दे चुके है।

पंच–तीर्थ
ब्रज में इसी दिन से पंच–तीर्थ परिक्रमा भी शुरू हो जाती है। विशेष रूप से स्त्रियाँ इसमें भाग लेती है। पहले दिन मधुवन, दूसरे दिन सतोहा, तीसरे दिन गोकर्ण महादेव, चौथे दिन वृन्दावन और पाँचवें दिन गरूड़ गोविंद की परिक्रमा देती हैं।

ब्रहम कुण्ड का मेला
सावनमास की शुक्ल नवमीं को वृन्दावन में ब्रहमकुण्ड का मेला लगता है।

पवित्रा–एकादशी
श्रावणमास की शुक्ल एकादशी को पवित्रा एकादशी का उत्सव होता है। इस दिन मंदिरों में ठाकुरजी को पवित्रा नाम की माला पहनाई जाती है। बल्लभाचार्य ने इसी दिन 'ब्रहम सम्बन्ध' की दीक्षा देना शुरू किया था।

सनूने/रक्षा बन्धन/ वैदिक पर्व
यह उत्सव सावनमास की शुक्ल पूरनमासी को मनाया जाता है। इसके कई कारण है। यह त्यौहार वैदिक पर्व के रूप में भी मनाया जाता है। वैदिक पर्व केवल ब्राहमण वर्ग से सम्बन्धित माना जाता है। इस दिन राजा बलि ने भगवान को तीन पैर जमीन देने का वचन दिया था। इसी घटना को कहानी के रूप में सुनाते हैं।
इस त्यौहार को ब्रज लोक जीवन सनूने (सलूने) के रूप में मनाता है। लोक–जीवन में महिलाए घर की दीवार पोतकर सलूने/सनूने रखती है फिर दूध सेमई से उसकी पूजा करती है। इस अवसर पर बहने अपने भाइयों के हाथ में राखी यानी रक्षाबंधन बाँधती है। राखी, भाई–बहन के बंधन का प्रतीक है। भाई बहन को उपहार स्वरूप कुछ देता है। बहन भाई के मंगल की कामना करती है। ब्रज में सभी जाति के लोग इस त्यौहार को मनाते हैं। गाँव में दंगल भी होते हैं जिसे पूरा गाँव उत्साह के साथ देखने जाता है।
ऐतिहासिक घटना के अनुसार करमवत्ती के द्वारा हिमायूँ को राखी भेजने पर उसने युद्ध ना करके राखी भेजने वाली बहन की रक्षा की।

कृष्णजन्माष्टमी
भादोंमास की कृष्ण अष्टमी को श्री कृष्ण का जन्मदिन मनाया जाता है। इस दिन सब लोग व्रत रखते हैं। रात के 12 बजे कृष्ण जन्म के बाद पूजा अर्चना करके प्रसाद बांटा जाता है और व्रत खोलते हैं। मंदिरों में सुबह से रात तक अनेक कार्यक्रम होते है। यह उत्सव बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। कृष्ण जन्म भूमि पर मेला लगता है। कृष्ण की लीलाओं को दिखाया जाता है। दूरदर्शन पर भी श्री कृष्ण जन्मोत्सव का सीधा प्रसारण मथुरा से होता है। कृष्णजन्माष्टमी को गोकुल वासी एक दिन पहले मनाते हैं। नन्दगाँव वासी, कृष्ण जन्माष्टमी एक दिन बाद में मनाते हैं।

नन्दोत्सव
भादोंमास की शुक्ल तृतीया को मथुरा और गोकुल के मंदिरों में नन्दोत्सव मनाया जाता है। मंदिरों में दही में हल्दी मिलाकर भक्तों के ऊपर फैंकते हैं। इसमें ठड़ा–ठड़ी नृत्य, जन्मोत्सव की बधाई का गायन और गोप–ग्वालों का नाच–गान होता है। ब्रजवासी मद–मस्त होकर गाते है–
नन्द कै आनन्द भयै जै कन्हैया लाल की।
हाथी दीने घोड़ा दीने, और दीनी पालकी।

हरितालिका तीज
भादोंमास की शुक्ल तृतीया को ब्रजमण्डल की ब्रजवनिताए निर्जल व्रत रखती है। यह व्रत पति के मंगल और सौभाग्य के लिए रखा जाता है। यह व्रत सबसे कठिन होता है।

गणेश चौथ
भादोंमास की शुक्ल चतुर्थी को गणेश जी का जन्मदिन मनाया जाता है। इस दिन बच्चों का पट्टीपूजन या कॉपी–पेंसिल, पूजन गुरूजी से कराते है। पाठशालाओं में गुरू–पूजन होता है। मोतीचूर के लड्डुओं का प्रसाद बटता है। रंग–बिरंगे, छोटे–छोटे डन्डों से बच्चे पाठशालाओं में डंडे से डन्डा बजाकर चट्टा खेलते हैं। इसे 'डन्डा चौथ' 'चट्टा चौथ' भी कहते हैं।

ऋषि पंचमी/रिग पंचमी
भादोंमास की शुक्ल पंचमी को यह त्यौहार मनाया जाता है। घास के नौ तिनको से एक ऋषि बनाते हैं। खीरा रखकर नवऋषियों की पूजा करते हैं। लोक कथा कहते हैं।

बलदेव छट
यह त्यौहार भादोंमास की शुक्ल षष्ठी को मनाया जाता है। इस दिन दाऊजी के मंदिर में बड़ा लोकोत्सव मनाते हैं और मैला लगता है।

राधा अष्टमी
भादोंमास की शुक्ल अष्टमी को राधा जी का जन्मदिन मनाया जाता है। वृन्दावन, बरसाना, गोकुल के मंदिरों में राधा सम्बन्धी भजन गाये जाते हैं। वृन्दावन में स्वामी हरिदास की जयन्ती भी मनाई जाती है।

वामन द्वादशी
भादोंमास की शुक्ल द्वादशी को भगवान वामन का जन्मदिवस मनाया जाता है। इस दिन भी मंदिरों में भजन–कीर्तन करते हैं।

मटकी लीला
भादोंमास की शुक्ल त्रयोदशी को बरसाने के निकट 'सांकरी खोर' स्थान पर मटकी लीला होती है। दो पहाड़ों के बीच एक संकरा मार्ग है। यहाँ पर कृष्ण मार्ग को रोककर गोपिकाओं से दूध, दही, माखन का दान लिया करते थे। उसी स्थान पर गोप–गोपियों का वेश धारण करके दान लेते हैं। दही–माखन की मटकी फोड़ दी जाती है। मटकी लीला देखने के लिए लोग दूर–दूर से आते हैं।

अनन्त चौदस
भादोंमास की शुक्ल चतुर्दशी को अंतचौदस का त्यौहार मनाया जाता है। अनन्त विष्णु का नाम है। इस दिन विष्णु–पूजन किया जाता है। एक डोरे से अनन्त बनाकर सीधी भुजा पर अनन्त बाँधा जाता है।

पितृ पक्ष
क्वारमास की कृष्ण प्रतिपदा से अमावस्या तक 15 दिन का पखवाड़ा पितृपक्ष कहलाता है। इन पन्द्रह दिनों में पितरों का श्राद्ध किया जाता है। पितरों को जल से तर्पण करते है। इन दिनों में ब्रजवासी कोई शुभ कार्य नहीं करते।

सांझी / झांझी / न्यौरता
क्वारमास की शुक्ल प्रतिपदा से आठ दिन तक यह उत्सव मनाया जाता है। सांझी ब्रज की एक लोक–देवी है। सांझी की पूजा संध्या समय की जाती है। सांझी गौरी–पार्वती का एक लोक–प्रचलित रूप है। सांझी का लोकोत्सव ब्रज बालिकाओं का प्रमुख खेल है। ब्रज बालिकायें घर की दीवारों पर गोबर, फूल, चमकीली पत्तियों से सांझी बनाती है। नौ दिनों तक नित नये रूप में सांझी को परिवर्तित करके सजातीं हैं। रोज शाम को आरती करती हैं। प्रसाद बाँटते हैं। लड़कियाँ सामूहिक रूप से गीत गाती है। ब्रज के गाँवों में कहीं–कहीं घर की दीवारों पर छोटा मन्दिर बनाती हैं उन पर लोक–चित्रकारी करती हैं। मिट्टी की 'गौरा' बनाकर उसमें पधारती हैं संध्या समय पूजन करती हैं। सामूहिक रूप से भजन गाती है। इसे न्यौरता कहा जाता है।

गौरी री गौरी खोल किवरिया, बाहर ठाड़ी तेरी पूजनहारी।
गौरी पूजंतर बेटी, कहा फल मांगे।
मातु पिता कूं राज जु मांगे। भैयन की जौड़ी मांगे।
भाभी की गोद भतीजों मांगे।

झांझी
झांझी का खेल ब्रज में बालिकाऐं खेलती है। झांझी एक छेददार छोटी सी हॉड़ी होती है। जिसमें जलता हुआ दीपक रखते हैं। झांझी के छेदों में से रोशनी निकलती है। संध्या के समय लड़कियाँ जलाकर बैठ जाती हैं और झांझी के लोक गीत गाती है। इन लड़कियों को पैसे भी मिलते है। अब यह परंपरा प्रायः लुप्त हो चुकी है।

टेसू
ब्रज में इन्हीं दिनों बालक टेसू खेलते हैं। यह खिलौना महाभारत कालीन यौद्धा बर्बरीक का प्रतीक माना जाता है। बर्बरीक का कटा सिर एक छोंकर के पत्ते पर रख दिया था और उसी कटे सिर द्वारा महाभारत का युद्ध देखने का वरदान भी मिला था। ब्रज में इसीलिए छौंकर के वृक्ष की भी पूजा की जाती है। बालक टेसू में दीपक जलाकर घर–घर जाते हैं और पैसे माँगते हैं। अब यह खेल प्रायः लुप्त सा हो गया है।

लोकप्रिय टेसू गीत
मेरा टेसू यहीं अड़ा
खाने को माँगे दही–बड़ा
दही–बड़े में मारी लात
वो जा पड़ी गुजरात
गुजरात की बीबी मोटी
वो खाय चने की रोटी
मियाँ ने पिया घी
बीबी का निकला जी।

नवरात्रि व्रत
क्वार मास की शुक्ला प्रतिपदा से लेकर नवमीं तक नवरात्रियों में देवी की पूजा होती है। नवरात्रि के व्रत रखे जाते हैं। मंदिरों में शाम को देवी भजन गाए जाते हैं। अष्टमीं या नवमीं को कन्या–लांगुरा जिमाये जाते हैं। मिट्टी के पात्र में जौ उगाए जाते हैं, इन जवारों को पूजा में स्थान देते हैं। इन दिनों देवी जागरण भी होता है।

दशहरा / विजयदशमी
क्वारमास की शुक्ल दसवीं को दशहरा पूरे उत्तर भारत में मनाया जाता है। क्षत्री लोग इस दिन हथियारों की पूजा करते हैं। ब्रज के घरों में इस दिन थापा रखकर पूजा की जाती है। इस अवसर पर छौंकर के वृक्ष की पूजा की जाती है। इस दिन नीलकंठ पक्षी को देखना शुभ माना जाता है। इस दिन रावण का पुतला जलाया जाता है। क्वार के महीने में रामलीला भी होती है।

भरत–मिलाप
क्वारमास की शुक्ल एकादशी को होडल, वनचारी आदि में भरत–मिलाप की सवारिया निकाली जाती है। इस दिन होडल में मेला लगता है।

औली
क्वारमास की शुक्ल षष्टी को जैन समाज इस धार्मिक उत्सव को मानता है, यह उत्सव दस दिन तक चलता है। जैन समुदाय व्रत रखते हैं। मंदिर जाते हैं।

शरद पूर्णिमा
क्वारमास की पूरनमासी को शरदपूर्णिमा का उत्सव मनाया जाता है। भगवान कृष्ण ने शरद की चाँदनी में महारास किया था। मंदिरों में मूर्तियों को श्वेत वस्त्र पहनाकर चाँदनी रात में बैठाया जाता है। वृन्दावन में कहीं–कहीं शरद पूनों की रात को रास होता है। घर में ब्रजवनिताऐं व्रत रखती है, मैंहदी महावर लगाकर श्रृंगार करके चन्द्रमा को अर्ध्य देती है। घरों में खीर बनाकर चाँदनी में रखते हैं। सभी खाते है। शरद की चाँदनी में सुई में धागा डालते है। (ऐसा माना जाता है कि आँख की रोशनी बढ़ती है।)

करवा चौथ
कार्तिकमास की कृष्ण चतुर्थी को पूरे ब्रजमण्डल में विवाहित महिलाऐं इस त्यौहार को मनाती हैं। सुहागिन महिलाए निर्जल व्रत रखकर अपने पति की लम्बी आयु की कामना करती हैं। इस दिन गोबर, मिट्टी या गेरू से पोतकर ऐपन से 'करवा चौथ' का थापा रखकर उसकी पूजा करती हैं। पूजा के समय महिला एक लोक कथा भी कहती है। पूर्ण श्रृंगार करके चन्द्रमा को चलनी के द्वारा दर्शन करके अर्ध्य देकर व्रत तोड़ती हैं।

अहोई आठें
कार्तिकमास की कृष्ण अष्टमी को यह त्यौहार संतान की दीर्घ आयु के लिए मनाया जाता है। 'अहोई माता' की मूर्ति का अंकन दीवार पर किया जाता है। पूजा के समय महिलाएँ एक लोक कथा भी कहती हैं।

घनतेरस

कार्तिकमास की कृष्ण तैरस के दिन घनावतरि का जन्मदिन मनाया जाता है। इस दिन घरों में खील–बतासे, नया बरतन, सोना या चाँदी की नई चीज, पूजन की सामग्री खरीदना शुभ माना जाता है। घर में नई झाड़ू लाना शुभ माना जाता है। एक दीपक जलाते है। दिपावली की सामग्री भी आज के दिन ही खरीदते है। बाजार खूब सज जाते हैं।

रूप चौदस

कार्तिकमास की कृष्ण चौदस को 'नरक चतुर्दशी' के रूप में मनाया जाता है। इस दिन कृष्ण ने नरकासुर का वध किया था। ब्रज नारियाँ शाम को घर के दरवाजे पर/घूरे पर/चौराहे पर तेल का दीपक जलाकर रख आती हैं।

दीपावली

कार्तिकमास की अमावस्या को मनाई जाती है। यह त्यौहार वैश्यों और ब्राह्मणों का है। आजकल सभी वर्ग के लोग इस त्यौहार को मनाते हैं। प्राचीन काल में इस दिन 'यक्ष–पूजा' की जाती थी। वर्तमान समय में लक्ष्मी गणेश का पूजन मुहूर्त के अनुसार किया जाता है। खील–बतासे मिठाई से पूजन किया जाता है। दीवार पर दिवाली मैया की आकृति बनाते है। उसे चाँदी का सिक्का लगाकर ऐपन के साथ पान में दवाकर लपसी से चिपकाते है। पूजन के बाद घरों में दीपक जलाते है। मंदिर में देशी घी का दीपक जलाते जाते हैं। घरों में तेल के, बत्तीस दीपक जलाने जरूरी होते हैं। आजकल मोमबत्ती भी जलाई जाती है। एक–दूसरे के घर मिठाई भेजते हैं। ऐसा माना जाता है आज के दिन राम रावण को मारकर अयोध्या वापिस आये थे। इस खुशी में घर–बाहर दीपक जलाये जाते हैं। दुकानदार लोग आज के दिन नये वही–खाते बनाते हैं, और उनके ऊपर सतिया बनाकर पूजा करते हैं। वैश्य लोग लक्ष्मी पूजन के बाद घर की स्त्रियों और लड़कियों को रूपया देते हैं। दीपावली के दिन बहुत से लोग जुआ खेलते हैं। यह सामाजिक दोष है। यह उत्सव ब्रजवासी बड़ी धूमधाम से मनाते है।

गोवर्धन पूजा या अन्नकूट

कार्तिकमास की शुक्ल प्रतिपदा के दिन ब्रजवासी यह उत्सव बड़ी घूम–घाम से मनाते हैं। प्राचीन समय में इन्द्र की पूजा होती थी। कृष्ण ने जब गोवर्धन पर्वत को उठाकर सबकी रक्षा की उसी समय से गोवर्धन की पूजा की जाने लगी। घर में गोबर से गोवर्धन की मानवाकार आकृति दोनों हाथों से पर्वत उठाते हुए बनाते है। चारों तरफ घेरे पर सीकें गाढ़ कर रूई लगा देते है जो पर्वत के वृक्षों की प्रतीक है। आकृति के पेट की नाभी में बड़ा सा छेद करके दूध–दही, शहद–मक्खन–खील आदि भर देते हैं। गोबर से गूजरी ग्वालिन, मटका–मटकी, ग्वाला, गऊ और द्वार पर कुत्ता भी बनाते हैं। शाम के बाद खीर–पूरी से पूजा करते है। मंदिरों में अन्नकूट की सब्जी बनती है। अन्नकूट (इस सब्जी में हर प्रकार की सब्जी को मिक्स करके बनाया जाता है।) भगवान का भोग लगाकर सभी को प्रसाद के रूप में बाँटा जाता है। पूजन करते समय लोक गीत गाते हैं।

हो हरि गोधन पूजन आये
हरे हरे गोबर अँगन लिपाये
औरु मुतियन चौक पुराये
हो हरि गोधन पूजन आये।

मीठे मीठे दिवला सिकाए
औरु मोहन भोग लगाये
हो हरि.....।
ताती जलेबी दूध के लाडू
और सब पकवान बनाये
हो हरि गोधन पूजन आये।
गंगा जमुना नीर मँगाए
औरु गिरवर उबटि न्हवाए
हो हरि.....।
सोने कौ दिवला कपूर की बाती
और गऊय के घिरत जराए
हो हरि गोधन पूजन आए।

सात कोस की दई परिकम्मा
औरु चरनन सीस नवाये
हो हरि गोधन पूजन आये।
धूप दीप लै करीए आरती
षट् रस भोग लगाए
हो हरि गोधन पूजन आये।।

यम द्वितीया/भाई दौज

कार्तिकमास की शुक्ल द्वितीया को यह त्यौहार मनाया जाता है। इस दिन यमुना–स्नान का बहुत महत्व है। कहा जाता है कि यमुना यम की बहन थीं। यमुना और यमराज की पूजा की जाती है। इस दिन भाई–बहन एक दूसरे का हाथ पकड़कर यमुना में स्नान करते हैं। ऐसी मान्यता है कि ऐसा करने से जन्म–जन्मातर वह भाई–बहन रहते हैं। बहन–भाई के तिलक करके, नारियल और मिठाई देती हैं। भाई दक्षिणा देता है।

पूतनावध का मेला

कार्तिकमास की शुक्ल षष्टी को महावन में पूतनावध का मेला लगता है। यह मेला कृष्ण द्वारा पूतना वध की याद में मनाया जाता है।

गोपाष्टमी/गौ आठै

कार्तिक मास की शुक्ल अष्टमी को मथुरा में मेला लगता है। इस दिन ब्रजवासी सुनहरे रंग की पन्नी से गायों के सींगों को सजाते है। फूल माला पहनाते है। गायों को लोई प्रत्येक महिला देती है। गायों के जुलूस में कृष्ण और बलदेव भी निकलते हैं।

अक्षय नवमी

कार्तिक मास की शुक्ल नवमी को सरस्वती कुण्ड के पास यह मेला लगता है। छोटे–बड़े सभी परिक्रमा देते हैं।

कंस मेला

कार्तिक मास की शुक्ल दसवी को मथुरा में यह मेला लगता है। मथुरा के चौबे ब्राह्मणों द्वारा यह अभिनय किया जाता है। कृष्ण और बलदेव हाथों में लाठी लेकर निकलते हैं। कंस टीले से तिलक द्वार के बाहर कृष्ण कंस को मार देते है। फिर कृष्ण–बलदेव की सवारी हाथी पर निकलती है। लोक गीत भी गाया जाता है। यह चौवे और चतुर्वेदियों का प्रसिद्ध मेला है। भजन भी गाते हैं।

कंसा मार मधुपुरी आये,
कंसा के घर के घबराये।
मार मार लट्ठन धूर करि आये।।

देवोठानएकादशी

कार्तिक मास की शुक्ल एकादशी को चार मास से सोये देवताओं को इस दिन जगाते है। ब्रजवनिताऐं आँगन को लीपकर खडिया ऐपन और गेरू से देवोठान की बहुत बड़ी आकृति बनाती हैं। बीचों–बीच एक ढरा के नीचे सिघाड़े, फल, गुड़, गन्ना का टुकड़ा आदि ढककर रख देते हैं। शाम को पूजन करते हैं दीपक जलाते है। परिक्रमा देते हैं। सभी उस ढरा पर उगलियों से पीट–पीटकर

जगाते है और देवोठान का लोकगीत गाते है। इस दिन से शादी–विवाह और शुभ कार्य होने शुरू हो जाते है। इस दिन बिना मुहूर्त का अनसूझा विवाह भी जो जाता है।

देवोठान का गीत

उठौ देवा बैठो देवा
आँगुरिया चटकाओ देवा।
चलि चलि भूसे गोबर जाँय,
गोबर लाइ लाइ अँगन लिपाय
अँगन लिपाय कें बाम्हन नौंतें
बाम्हन दीजै कपिला गाइ सुरही गाय
चलि चलि भूसे डाब कटावै
डाब कटाइ कै जिबरी बटामें
जिबरी बटामें
जिबरी बटा कै खाट बुनामें खाट बुनामें
इतनी अंबर तारइयों तारइयों
इतनी जा घर भौतरिया, भौतरियाँ
इतनौई जा घर बरघ किरौरी।
बरघ किरोरी
और कौरे धरे मंजीरा धरे मंजीरा
जीऔ बहिन तुम्हारे बीरा। तुम्हारे बीरा।
औरें कौरें घरे चपेटा धरे चपेटा
जिऔ ससुरजी तिहारेऊ बेटा। तिहारेऊ बेटा
जनेऊ जनेऊ ढोकसरा भरि देउ
ढोकसरा फूटो राहे में चौराहे में,
अमुकदेई नाची गिरारे में।
इतनी पोखर मेंढकियाँ
इतनी ला घर भैंसरियाँ।।

तुलसी विवाह

कार्तिक मास की शुक्ल एकादशी को ही तुलसी और सालिग्राम के विवाह का लोकोत्सव मनाया जाता है। इस दिन गन्ने का मण्डप बनाया जाता है। सालिग्राम और तुलसी के पौधे के फेरे कराये जाते हैं। इस अवसर पर विवाह की भाँति गीत गाये जाते है।

गंगा पूर्णिमा

कार्तिक मास की पूरनमासी को कत्तकी भी कहते हैं। इस दिन गंगा स्नान का बड़ा पर्व है। लोक जीवन में इस गंगा स्नान का बड़ा महत्व है। लोक गीत गाती हुई ब्रजवनिताऐं स्नान करने जाती है। ब्रज के तरौली नामक गाँव में स्वामी का मेला लगता है।

नोटः अगहन (मार्ग शीर्ष–पौष) और पूस के महीने से विवाह की शुरूरात हो जाती है। शीतकाल का समय होता है, कड़ाके की शीत लहर शुरू हो जाती है, लोकोत्सव और त्यौहार इन महीनों में कम हो जाते हैं।

भैरवजयन्ती

अगहन मास की कृष्ण अष्टमी को भैरवनाथ का जन्म दिवस मंदिरों में मनाया जाता है। जोगियों को कढ़ी–भात का भोजन कराया जाता है।

विहार पंचमी

अगहन मास की शुक्ल पंचमी को वृंदावन में बिहारी जी के मंदिर में यह उत्सव होता है।

व्यंजन द्वादशी

अगहन मास की द्वादशी को यह उत्सव मानाया जाता है। इस दिन विविध व्यंजन बनाकर भगवान को भोग लगाया जाता है।

मार्ग शीर्ष पूर्णिमा

अगहन मास की पूरनमासी को दाऊजी का मेला लगता है। दाऊजी को रूई के वस्त्र पहनाते हैं। इस दिन को (गदला पूनों) भी कहते हैं।

मकर संक्रांति

मकर संक्रांति का त्यौहार 14 जनवरी को मनाया जाता है। मकर राशि पर सूर्य के आगमन की तिथि को मकर संक्रांति कहते है। इस दिन से सूर्य उत्तरायण में चलने लगता है। खिचड़ी, तिल का दान दिया जाता है। भीष्म पितामह ने इस दिन अपने प्राण त्यागे थे। दान–पुण्य के लिए यह दिन शुभ होता है।

मौनी मावस

माघ मास की अमावस्या को मौनी मावस का लोकोत्सव होता है। इस दिन ब्रजवासी मौन धारण करके गंगा–यमुना स्नान करते हैं। गुप्त दान देकर अपना मौन व्रत तोड़ते हैं।

दुर्वासा मेला

माघ मास में यमुना पार दुर्वासा ऋषि के मंदिर पर एकादशी अमावस्या, पूर्णिमा और वसंत पंचमी को मेला लगता है। कहा जाता यहाँ दुर्वासा ऋषि ने इस स्थान पर घोर तप किया था।

जखैया का मेला

माघ महीने के चारों रविवार को महावन में यह मेला लगता है। जखैया यक्ष का अपभ्रंश रूप है। पहले मेले में यक्ष की पूजा की जाती थी। उसकी याद में यह मैला लगाया जाता है।

वंसत पंचमी

माघ मास की शुक्ल पंचमी को 'श्री पंचमी' का लोकोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। इस दिन समुद्र से लक्ष्मी की उत्पत्ति मानी जाती है। ब्रजवासी तथा स्कूल–कालेज और मंदिरों में सरस्वती का पूजन किया जाता है। बालक–युवक–युवती सभी पीले वस्त्र पहनते हैं। मंदिरों में पीले फूल चढ़ाये जाते हैं। खेतों में सरसों की पीली चादर बिछ जाती है। वृन्दावन में शाह जी के मंदिर का एक कमरा वासन्ती रंग से सजाया जाता है। मथुरा और ब्रज के मंदिरों में विशेष उत्सव मनाया जाता है। प्राचीन काल में इस उत्सव को सुबसन्तक और मदनोत्सव भी कहा जाता था। मन्दिरों में अवीर–गुलाल की होली भी प्रारम्भ हो जाती है। धमार और ध्रुव पद रागों में गायन होता है। ब्रज लोक–गीत भी गाये जाते हैं।

शिवरात्रि और बम–भोला

फागुन मास की कृष्ण त्रयौदशी और चौदस को मनाया जाता है। शिव की पूजा की जाती है। पूजा में बेल पत्री, धतूरा और बेर चढ़ाए जाते हैं। इस दिन ब्रज वनिताएँ व्रत रखती हैं और शिव के भजन गाती हैं।

गोपी बने भोले नाथ, ब्रज में गोपी बने
गोपी बने भोले नाथ, ब्रज में गोपी बने
पहन लियो लहंगा, ओढ़ लई चुंदरी
बिंदिया लगाय लई लाल, ब्रज में गोपी बने
ऐ री बिंदिया लगाय लई लाल
ब्रज में गोपी बने

गोरी–गोरी बहियों में, हरी–हरी चूड़िया
मेंहदी लगाय लई लाल, ब्रज में गोपी बने भोलेनाथ
ऐ री मेंहदी लगाय लई लाल,
ब्रज में गोपी बने

छोटे–छोटे पैरो में, बजनी सी पायल
महावर लगाय लयौ लाल, ब्रज में गोपी बने भोलेनाथ
ऐ री महावर लगाय लयौ लाल,
ब्रज में गोपी बने

एक जनी यों उठ बोली
आय गईं गौरा जी की सास
ब्रज में गोपी बने भोलेनाथ
ऐ री आय गईं गौरा जी सास
ब्रज में गोपी बने

बरसाने की होली

फागुन मास की शुक्ल नवमीं को यह होली मनाई जाती है। एक दिन पहले नन्दगाँव के मंदिर का पुजारी बरसाने के मंदिर में पहुँचता है। लाड़लीजी के मंदिर में बरसाने के सभी लोग इकट्ठे होते है और सामूहिक रूप से राधाकृष्ण की होली का सुंदर वर्णन करते हैं। नन्दगाँव का पुजारी होरी (रसिया) गाता है और अपने गाँव की ओर से बरसाने वालों को होली खेलने के लिए निमंत्रण देता है। बरसाने वाले स्वीकार कर लेते हैं। दूसरे दिन नन्दगाँव के लोग रसिया (ग्वालों) का रूप धारण करके सुन्दर पगड़ी बाँधते है मोर पंख लगाते है चेहरे पर गुलाल और चन्दन का टीका लगाकर समूह में बरसाने की ओर रसिया गाते हुए ढाल हाथ में लेकर निकल पड़ते हैं। बरसाने के रास्ते में राधा–रानी के मंदिर में गाते हुए जाते हैं। होरी के रसिया पंचम अध्याय में देखिए। बरसाने और नन्दगाँव की गोपियों/स्त्रियों को, जिन लाठियों से होरी खेलनी होती है, उन लाठियों पर 'वसंत पंचमी' के दिन से ही रोज तेल मलती है और अपनी लाठी को मज़बूत बनाती हैं। यह परम्परा आज भी मनाई जाती है।

राधा–रानी को अटा में से बहार आकर होरी खेलने को बुलाते है। नन्दगाँव और बरसाने के गोस्वामी आमने सामने बैठकर हास–परिहास करते हैं। ग्वालों की और से गायन होता है। ग्वाले गायन के माध्यम से होली खेलने को ललकारते हैं। बरसाने की गोपियाँ (स्त्रियाँ) हाथों में लाठी लेकर नन्दगाँव के ग्वालों के सिर पर लाठी मारती है। ग्वाल–बाल (छोटे बच्चे) लोहे के तवे जैसी ढाल को सर पर बाँधे रहते हैं। उसी से अपना बचाव करते हैं।

बरसाने में सामरे की होरी रे। रसिया.....
लाल गुलाल लाल भए बदरा, मारत भरि भरि झोरी रे। रसिया.....
कौन गाँम के कुँमर कन्हैया, कोंन गाँम राधा गोरी रे ? रसिया.....
नन्द गाँम के कुँमर कन्हैया, बरसाने की राधा गोरी रे। रसिया.....
कहा कर रहे ग्वाल बाल सब, कहा करैं सब गोरी रे ? रसिया.....
ढाल रोपि रहे ग्वाल बाल सब, लठा चलाइ रहीं गोरी रे। रसिया.....

नन्दगाँव की होली

फाल्गुन शुक्ल दशमी को नन्दगाँव की होली होती है। इस दिन बरसाने के लोग राधा–रानी की ध्वजा को लेकर गाते–बजाते मग्न होते हुए नन्दगाँव आते हैं। नन्दराय जी के मंदिर में सबका भांग–ठन्डाई से स्वागत किया जाता है। सामूहिक रूप से होली (रसिया) गाते हैं। एक दूसरे के ऊपर मंदिर में टेसू के रंग अबीर–गुलाल से खूब होली खेली जाती है। इस सबके बाद नन्दराय जी के मंदिर से नीचे उतरते हैं। गलियों में नन्दगाँव की स्त्रियाँ सजधजकर श्रृंगार करके हाथों में लाठी ले लेकर लम्बा घूँघट डालकर बरसाने वालों से होली खेलती हैं। नन्दगाँव की स्त्रियाँ बरसाने वालो पर लाठी मार–मारकर होरी खेलती है। पुरूष इस अवसर पर होरी (रसिया) गाते है। रसिया गा–गा कर आनन्द लेते है। बरसाने वाले इन लाठी के प्रहार को ढालों के द्वारा बचाने की कोशिश करते हैं। जाते समय लड्डू मठरी का प्रसाद (फाग) गोपिकाओं का देते है।

नोटः बरसाने और नन्दगाँव में आज भी होली इसी रीति–रिवाज के अनुसार मनाई जाती है। पूरे विश्व में नन्दगाँव और बरसाने के लट्ठमार होरी प्रसिद्ध है। आज भी विदेशी पर्यटक दूर–दूर से लट्ठमार होरी देखने आते हैं। भारी भीड़ इक्ठ्ठी होती है। उत्तर प्रदेश पुलिस द्वारा तीन दिन पहले से ही रास्ते बन्द कर दिये जाते हैं या परिवर्तन कर देते हैं। चप्पे–चप्पे पर पुलिस रहती है। लट्ठमार होली का पूरे विश्व में टी.वी. पर लाइव प्रर्दशन किया जाता है। ब्रजवासी इस परम्परा को आज भी जिन्दा रखे है (ज्यों का त्यों ही)

रंग भरनी एकादशी

फाल्गुन मास की शुक्ल एकादशी को वृन्दावन में बिहारी जी के मंदिर में यह उत्सव मनाया जाता है। इस दिन से ब्रज में हर जगह होली की शुरूरात हो जाती है।

होली

फाल्गुन मास की पूरनमासी को सभी होली का पूजन करते है। गोबर की बनी गूलरियों से माला बनाकर घरों में होली रखते है। बड़ी होली जो गाँव के बाहर रखी जाती है। घर के बड़े बुजूर्ग या कोई पुरूष जौ की बाल, गुजिया/गुझिया लेकर जाते हैं। बड़ी होली में बाल भूनते हैं। गुजिया चढा देते हैं। वहाँ से थोड़ी सी अग्नि लाकर घर की होलिका में लगा देते हैं। घर के सभी स्त्री–बच्चे बाल भूनते हैं। इन बालों के भूने जौ को एक दूसरे को देते हैं। गले मिलते है। बड़ो के चरण स्पर्श करके आशीर्वाद लेते हैं।

फालेन की होली

होली के ही दिन फालेन गाँव में प्रहलाद कुण्ड के पास एक मेला लगता है। कुण्ड के पास पच्चीस–तीस फीट के घेरे में लकड़ी और उपलों में आग लगा कर होली जलाई जाती है। जब लाल लपटे निकलने लगती है तब वहाँ का पंडा कुंड में स्नान करके अंगोछा बाँधकर नंगे बदन, नंगे पैर जलती आग पर पैर रखकर निकलता है। यह पौराणिक कथा के अनुसार प्रहलाद की भक्ति भावना का प्रतीक है। यह परंपरा आज भी ज्यों की त्यों ही जिंदा है।

दाऊजी की होली

चैत मास की कृष्ण द्वितीया को बलदाऊजी के मंदिर के आंगन में पहले गायन–वादन होता है, फिर होली खेली जाती है। गाँव की स्त्रियाँ घूंघट डालकर डोलची और कपड़े के बटे हुए कोड़े लेकर आती हैं, उनके पति–देवर रिश्तेदार हाथ में पिचकारी लेकर होली खेलने आते हैं। पहले गुलाल उड़ाया जाता है फिर पुरूष स्त्रियों पर रंग फैंकने लगते हैं। स्त्रियाँ पानी के भीगें कोड़ों से पिटाई करती हैं। पानी के भीगे कोड़ों की मार बहुत तेज़ होती है। दोनों पक्ष हार नहीं मानते है। दाऊजी के हुरंगों को देखने के लिए लोग दूर–दूर से आते है। मंदिरों की छत पर देखने वालों की भीड़ हो जाती है।

जतीपुरा की होली

जतीपुरा गाँव गोवर्धन के पास है। यहाँ पर एक दिन वहाँ का नाई गाँव की स्त्रियों को होली खेलने के लिए निमंत्रण देने आता है। दूसरे दिन खूब गायन–वादन होता है। स्त्री–पुरूष लठमार होली खेलते हैं।

जाब बठैन की होली

जाब बठैन गाँव के स्त्री–पुरूष बलभद्र कुंड के पास एक मैदान में घेरा बनाकर बैठ जाते हैं। स्त्रियों के हाथों में लाठियाँ और पुरूषों के हाथों में बबूल की कांटेदार डालिया होती हैं। स्त्रियाँ जब लाठी चलती है, पुरूष डाल के पत्तों में छिप जाते हैं। बबूल की कांटेदार डालियों से अपना बचाव करते हैं। ब्रज में यह बड़ी अजीब होली होती है। इस होली को देखने के लिए बड़ी भीड़ इकठ्ठी होती है।

आन्यौर की होली

आन्यौर की होली अनौखी होती है। खूब गायन–वादन होता है। स्त्रियों के हाथों में लाठी होती है, वह उस लाठी से पुरूषों को केवल छूती है। प्रहार नहीं करती।

नोटः नन्दगाँव–बरसाने और अन्य जगहों पर लट्ठमार होली में स्त्रियाँ ताकत के साथ सर पर लट्ठ चलाती है। कोई भी पुरूष बदल कर नहीं मारता।

ब्रज में लाठियों से होली खेलने की प्रथा कब से और कैसे शुरू हुई। इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता। ब्रजवासी सदैव यह प्रार्थना करते हैं कि राधा–कृष्ण की यह अलौकिक होली हमेशा बनी रहे। इसका भी लोकगीत है–

नित–नित होरी ब्रज में रहो।

उमरी–रामपुर का चिरकला नृत्य

ब्रज की होली का सुप्रसिद्ध लोक नृत्य है। यह नृत्य चाँदनी रात में होता है। चिरकला लकड़ी का बना एक चौखटा होता है। जिसमें 48 चिड़ियों के आकार वाली पंखुड़िया होती है। इन पंखुड़ियों में मिट्टी या घातु के घड़े रखे जाते हैं। पखुड़ियों पर 48 दीपक जलाकर रखे जाते हैं। घड़ो में बहुत वज़न होता है। नृत्य करने वाली इस चौखटा को सिर पर रख कर नाचती है। अपने दोनों हाथों में पानी से भरे दो लोटे जिन पर जलता हुआ दीपक रखा रहता है। स्त्री का देवर करताल देकर नचाता है। नाचने वाली स्त्री करताल और लय पर दौड़ लगाकर नाचती है। किन्तु नाचने में न घड़े गिरते, न दीपक बुझता न स्वयं गिरती। इस नृत्य को देखने के लिए भी बड़ी संख्या में लोग इकठ्ठे होते हैं।

फूलडोल

ब्रज में फूलडोल सजाने की परम्परा अति प्राचीन है। मंदिरों में देव–मूर्तियों के फूल बंगले सजाये जाते हैं। मथुरा में–जमुना जी का, वृन्दावन में–बिहारी जी का, वनचारी में–दाऊजी का.....आदि मंदिरों में फूलडोल सजाया जाता है।

ब्रहमोत्सव

चैत्र मास की कृष्ण द्वितीया से लेकर एकादशी तक यह उत्सव श्रीरंग जी के मंदिर में मनाया जाता है। नित्य रंग जी के विशेष दर्शन होते हैं। सवारी भी निकाली जाती है। नवमी को ठाकुर जी को रथ में बैठाकर बगीचे तक ले जाते हैं, दसमी को आतिशबाजी का मेला होता है। इस उत्सव में ब्रजवासी बहुत बड़ी संख्या में वृन्दावन आते हैं। इस उत्सव में ब्रज के लोक जीवन के नित नये दर्शन होते हैं।

ब्रज में 'सात वार और नौ त्यौहार' पूरे साल चलते रहते हैं। ब्रज लोक जीवन में उत्साह और उमंग दोनों ही जीवन को गतिशील बनाते हैं। ब्रजवासी भगवान कृष्ण की लीला स्थली में राधा–कृष्ण के चरणों में अपना सर्वस्व न्यौछावर करते हैं। यही ब्रज लोक जीवन है। ब्रजवासी हर पर्व उत्सव और त्यौहार को खुशी और उल्लास के साथ मनाते हैं।

सन्दर्भ–सूत्र

1. गिरीश कुमार चतुर्वेदी, ब्रज की लोक संस्कृति, पृ० 107